स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

विकास का सिद्धांत

डार्विन का मूल विचार था कि विविधता ही जैव विकास का आधार है। यह विविधता कैसे अगली पीढ़ी में पहुंचती है, इसे लेकर डारविन बहुत स्पष्ट नहीं थे। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया था कि पूर्वजों के गुणों के सम्मिश्रण से विविधता एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मिलती है।

जब 1867 में डार्विन के इस दावे को गणितीय दृष्टि से गलत दर्शा दिया गया तो उन्होंने ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़ के छठे संस्करण में लेमार्क के विचारों का सहारा लिया। लेमार्क के मुताबिक किसी जीव द्वारा अपने जीवन काल में अर्जित गुण अगली पीढ़ी को मिलते हैं।

यह विडम्बना ही है कि इस गुत्थी का अधिक मान्य जवाब तो दो साल पहले ही मेण्डल प्रकाशित कर चुके थे मगर उनका काम सन 1900 तक उपेक्षित ही रहा। बीसवीं सदी के शुरुआती वर्षों में लेमार्कवाद और मेण्डलवाद के बीच एक तरह का युद्ध छिड़ा रहा। इस लड़ाई में धोखाधड़ी और जालसाज़ी जैसे हथियारों का सहारा भी लिया गया। एक उदाहरण जीवशास्त्री पॉल कैमेरर का है जिन्होंने मिडवाइफ टोड व अन्य उभयचर जीवों पर प्रयोग किए थे।

मेंढकों पर किए गए प्रयोग - गौरतलब है कि मेंढकों में मैथुन क्रिया पानी में होती है। इस दौरान मादा की फिसलन भरी पीठ पर पकड़ जमाना आवश्यक होता है। लिहाज़ा, संभोग काल में नर के पंजों पर काली नुकीली कांटेदार संरचना विकसित हो जाती है जिसे मैथुन गद्दी कहते हैं। दूसरी ओर, मिडवाइफ टोड ज़मीन पर मैथुन करते हैं, इसलिए उनके नर को न तो मैथुन गद्दी की ज़रूरत होती है और न ही इनमें यह पाई जाती है।

कैमेरर ने 1909 में दावा किया कि उन्होंने कई पीढ़ियों तक मिडवाइफ टोड में मैथुन क्रिया पानी के भीतर करवाई और अंततः उनमें मैथुन गद्दी का विकास हो गया। उनका कहना था कि यह लेमार्क द्वारा प्रतिपादित अर्जित गुणों के हस्तांतरण के सिद्धांत का प्रमाण है।

मेण्डल के जिनेटिक सिद्धांत पर भरोसा करने वालों को यह बात अगले 15 सालों तक परेशान करती रही। मगर 7 अगस्त 1926 के दिन *नेचर* पत्रिका में अमेरिकन म्यूज़ियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री के डॉ. जी. के. नोबल का पर्चा प्रकाशित हुआ जिसमें बताया गया था कि कैमेरर के टोड्स की मैथुन गद्दियां नकली थीं और इंडिया इंक से बनाई गई थीं। जब यह खुलासा हुआ तो सारा वैज्ञानिक जगत हिल गया। इसके ठीक दो महीने के भीतर ही कैमेरर ने खुदखुशी कर ली।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी